ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

परोऽपेहि मनस्पाप। अथर्ववेद-6/45/1

ओ मेरे मने के पाप! तू मुझसे दूर भाग जा।

O the vice in my my mind! Leave me and go far away.

वर्ष 38, अंक 14 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 16 फरवरी, 2015 से रविवार 22 फरवरी, 2015
विक्रमी सम्वत् 2071 सृष्टि सम्वत् 1960853115
दयानन्दाब्द : 192 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल :aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार का 112वां दीक्षान्त समारोह सम्पन्न

गुरुकुल की शिक्षा पद्धति विशिष्ट एवं अतुलनीय है – राजनाथ सिंह, गृहमन्त्री

''गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय एक असाधारण परम्परा से जुड़ा हुआ विश्वविद्यालय है, गुरुकुल की शिक्षा पद्धति विशिष्ट एवं अतुलनीय है।'' गुरुकुल विश्वविद्यालय के 112वें दीक्षान्त समारोह के अवसर पर दीक्षान्त भाषण देते हुए मुख्य अतिथि गृहमंत्री भारत सरकार श्री राजनाथ सिंह ने उक्त बात कही, उन्होंने कहा कि कोई भी व्यक्ति अपने पद से बड़ा नहीं होता अपितु अपने कृतित्व से बड़ा होता है। उन्होंने कहा कि गुरुकुल भारतीय सभ्यता संस्कृति का प्रतीक है। लेकिन उन्होंने दु:ख भी जताया

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार के 112वें दीक्षान्त समारोह के अवसर पर मंचासीन मुख्य अतिथि गृहमन्त्री श्री राजनाथ सिंह साथ में हैं कुलाधिपति डॉ. रामप्रकाश, कुलपति डॉ. सुरेन्द्र कुमार, गुरुकुल संचालक संस्था आर्य विद्या सभा के प्रधान महाशय धर्मपाल, मुख्याधिष्ठाता आचार्य यशपाल एवं आमन्त्रित विद्वान् अतिथिगण।

– शेष पृष्ठ 5 पर

वैदिक साहित्य के प्रचार-प्रसार का यज्ञ आरम्भ

महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव 14 फरवरी को हुआ प्रचार स्टालों का उद्घाटन

युवाओं को आकर्षित कर रहा है – सत्यार्थ प्रकाश : शंका समाधान हेतु विद्वानों की भी सेवाएं

पुस्तक मेले में वैदिक साहित्य प्रचार स्टाल का उद्घाटन करते श्री आनन्द चौहान जी, श्री ठाकुर विक्रम सिंह जी, सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी एवं अन्य अधिकारीगण

विस्तृत समाचार एवं सूचना पृष्ठ 4 पर

सारे देश में महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव उत्साह पूर्वक सम्पन्न

समस्त आर्यसमाजों एवं आर्य संस्थानों से निवेदन है कि अपने जन्मोत्सव कार्यक्रमों की सूचना/फोटो/रिपार्ट आर्यसन्देश में प्रकाशनार्थ अवश्य भेजें।

विस्तृत विवरण अगले अंक में प्रकाशित होगा।

वेद-स्वाध्याय

स्वार्थ त्याग कर पवित्रान्त:करण से नित्य आपकी वन्दना करें

उपत्वाग्ने दिवेदिवे दोषावस्तर्धिया वयम्। नमो भरन्त एमसि।।
ऋ॰ 1/1/6: साम॰ पू॰ 1/1/4।।
ऋषि: - **मधुच्छन्दा:**।। देवता- **अग्नि:**।। छन्द:- **गायत्री**।।

शब्दार्थ- अग्ने = हे अग्ने! **वयम्** = हम, **दिवे दिवे** = प्रतिदिन, **दोषावस्त:** = रात और दिन के समय, **धिया** = बुद्धि वह कर्म से , **नम: भरन्त:** = नमस्कार की भेंट लाते हुए, **त्वा** = तेरे, **उप** = समीप **एमसि** = आ रहे हैं।

विनय - जब से हम उत्पन्न हुए हैं, दिन के पश्चात् रात और रात के पश्चात् दिन आता-जाता है। प्रतिदिन एक नया-नया दिन और एक नयी-नयी रात आती-जाती है । इस प्रकार यह अनवरत, काल-चक्र चल रहा है। इस काल चक्र में हम कहाँ जा रहे हैं? हे मेरे प्रभो! अग्निदेव! तुमने तो ये अहोरात्र इसलिए रचे हैं कि प्रत्येक अहोरात्र के साथ अपने आत्मिक उन्नति का दांया और बांया पैर आगे बढ़ाते हुए हम प्रतिदिन तुम्हारे निकट पहुँचते जाएँ। यदि हम प्रत्येक अहोरात्र के आरम्भ में, अर्थात् प्रात: काल और सायंकाल के समय में अपनी बुद्धि द्वारा तुम्हारे आगे झुकते हुए, नमन करते हुए तथा कर्म द्वारा भी अपने 'नम:' की भेंट तुम्हारे प्रति लाते हुए, तुम्हारे लिए स्वार्थ-त्याग करते हुए चलेंगे तो यह दिन-रात का चक्र हमे एक दिन तुम्हारे चरणों में पहुँचा देगा। इसलिए, हे अग्निरूप परमदेव! हम आज से निश्चय करते है कि हम प्रत्येक अहोरात्र को (प्रात: काल और सायंकाल) अपनी बुद्धि तथा कर्म द्वारा तुम्हें नमस्कार की भेंट चढ़ाते हुए (आत्म-समर्पण व स्वार्थ-त्याग करते हुए) ही अब जीएँगे और इस तरह जहाँ प्रत्येक दिन के श्रममय काल में हमारा दायाँ पैर तुम्हारी ओर बढ़ेगा, वहाँ प्रत्येक रात्रिकाल में हमारी उन्नति का बायाँ पैर उस उन्नति को स्थिर करता जाएगा। हे प्रभो! ये दिन-रात इसीलिए प्रतिदिन आते हैं। निश्चय ही आज से प्रत्येक अहोरात्र हमें तुम्हारे समीप लाता जाएगा। आज से प्रतिदिन हम स्वार्थ-त्याग द्वारा पवित्रान्त: करण होते हुए और पवित्रान्त: करण से प्रात:-सायं तुम्हारी वन्दना करते हुए प्रतिदिन तुम्हारी ओर आने लगे हैं, हे प्रभो! प्रतिदिन तुम्हारे समीप आते जा रहे हैं।

- **आचार्य अभयदेव**
वैदिक विनय से साभार

टिप्पणी : "वैदिक विनय" सतत् स्वाध्याय हेतु एक उत्कृष्ट ग्रन्थ है, जिसमें लेखक आचार्य अभय देव जी ने वैदिक मन्त्रों की सरल एवं सुग्राह्य व्याख्या की है। जिससे प्रत्येक साधारण बुद्धिजीवि व्यक्ति भी थोड़े से प्रयास में बहुत ज्ञान प्राप्त कर लेता है। यह वर्ष के 365 दिनों के लिए क्रमश: एक-2 मन्त्र के स्वाध्याय हेतु रचा गया ग्रन्थ है। आर्यसन्देश के प्रत्येक अंक में इसके एक मोती को आपके स्वाध्याय के लिए प्रकाशित किया जाएगा। आप इसका अध्ययन अवश्य करें एवं अपनी प्रतिक्रया अवश्य दें। यदि आप इस पुस्तक को प्राप्त करना चाहते हैं तो यह पुस्तक दिल्ली सभा के विक्रय विभाग में उपलब्ध है। यहाँ से क्रय कर आप ज्ञान रश्मि का आनन्द लें। पुस्तक खरीदने अथवा डाक द्वारा मंगाने के लिए श्री विजय आर्य (9540040339) से सम्पर्क करें। - सम्पादक

महर्षि के उद्गार

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा सेठ निर्भया राम को लिखा गया पत्र

भूमिका : महर्षि दयानन्द के विषय में जितना जाना जाए उतना कम है । इतने कम समय में वे कितना बड़ा कार्य कर गए ये अपने आप में अद्भुत है। उनके कार्यों का उनकी जीवनी उनके ऊपर लिखे हुए लेखो, उनके द्वारा लिखी गई पुस्तकों के माध्यम से तो जाना ही जा सकता किन्तु उनके कार्य करने की विधियों तथा उनके मन में चल रहे संकल्पों को जानने के लिए महर्षि दयानंद सरस्वती के पत्र और विज्ञापन अत्याधिक महत्त्वपूर्ण दस्तावेज है । आज हम उनके पत्रों और विज्ञापनों का संग्रह करते हैं। संग्रह करने वाले उन महानुभावों को नमन करते हैं और उनके प्रकाशक, कार्यकर्त्ताओं का भी आभार व्यक्त करते हैं। वर्तमान में दिल्ली सभा के विक्रय विभाग में रामलाल कपूर ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित पुस्तकें उपलब्ध हैं। हम समय समय पर उनमें से कुछ चुनिन्दा पत्र प्रकाशित करने की कोशिश करेगें जिससे आर्यजन महर्षि के विचारों एवं कार्य शैली से अवगत हों ।

सेठ निर्भयराम जी आनन्दित रहो!

यह पत्र आपको आवश्यक समझकर इसलिए लिखा जाता है कि आप इसको उपसभा में सब लोगों को सुना देवें। मुंशी कालीचरण रामचरणजी के पत्र से विदित हुआ कि आप लोगों को पाठशाला में आर्यभाषा संस्कृत का प्रचार बहुत कम और अन्य भाषा अंग्रेजी वा उर्दू फारसी अधिक पढ़ाई जाती है। इससे वह अभीष्ट जिसके लिए यह शाखा खोली गई है। सिद्ध होता नहीं दीखता। वरन आपका यह हजार मुद्रा का व्यय संस्कृत की ओर से निष्फल होता भासता है। हम ने कभी परीक्षा के कागजात वा आज तक की पढ़ाई का फल कुछ नहीं देखा। आप लोग देखते है कि बहुत काल से आर्यावर्त में संस्कृत का अभाव हो रहा है। वरन् संस्कृतरूपी मातृभाषा की जगह अंग्रेजी लोगों की मातृभाषा हो चली है। अंग्रेजी का प्रचार तो जगह-जगह सम्राट की ओर से जिनकी यह मातृभाषा है भले प्रकार हो रहा है। अब इसकी वृद्धि में हम तुम को इतनी आवश्यकता नहीं दीखती। और न सम्राट के सामने कुछ कर सकते हैं। हां, हमारी अति प्राचीन मातृभाषा संस्कृत जिसका सहायक वर्तमान में कोई नहीं है। और यही व्यवस्था देखकर संस्कृत प्रचारार्थ आपलोगों ने यह पाठशाला स्थापित की है। तो यह भी उचित कर्त्तव्य अवश्य है कि सदैव पूर्व इष्ट के सिद्धि पर नजर रक्खी जावे। अब इस के साधनार्थ यह होना चाहिए कि कुल पठन पाठन समय के छ: घण्टों में 3 घंटे संस्कृत 2 घण्टे अंग्रेजी और 1 घण्टा उर्दू फारसी पढ़ाई जाया करे। और प्रति मास संस्कृत की परीक्षा अन्य पण्डितों के द्वारा हुआ करे। और वे प्रश्नोत्तरों के कागजात हमारे पास भेजे जाया करें। अभी तक कुछ फल संस्कृत में इस शाला से नहीं लगा। सो इसलिए ऊपर जो कुछ लिखा गया उसको वर्त्ताव में लाओ तो अपने अभीष्ट के सिद्धि होने की आशा कर सकते हैं । **किमधिकं सुज्ञेषु।**

आजकल हम ऐसे देश में हैं जहां पर इस ऋतु के श्रेष्ठ फल अर्थात् आम पके तो दर किनार कच्चे भी नहीं मिलते। उस ओर इसकी फसल कैसी हुई है। यदि वहां आम फले हों तो एक बार मुम्बई आम अथवा और प्रकार के जो तुम्हारी समझ में अच्छे हों दो सौ तीन सौ रेल द्वारा प्रबन्ध करके भेज दो। परन्तु वहां से गद्दर आम रवाने करना जिससे यहां पर ठीक-ठीक आन पहुंचे। यदि डाक गाड़ी में रख दोगे तो शायद ठीक रहेगा। हमारे पास जयपुर के मुकाम पर चुरु सेठों के सरपञ्च का पत्र आया कि आप यहां पधारे। और लिखा है कि सांभर के रेलघर पर रथ, बहल और ऊंट इत्यादि सवारी भेज देवें अभी तो हमने उनको यही उत्तर लिख दिया है कि एक अच्छी वर्षा होने पर हम अजमेर से कहीं को रवाना हो सकेंगे। क्योंकि उदयपुर मेवाड़ की तरफ भी कुछ हमारे बुलाने का विचार हो रहा है। यदि उदयपुर को गये तो वह भी आप लोगों को विदित किया जायेगा। शायद इन दोनों स्थानों को जाने में आप से सवारी लेने की आवश्यकता नहीं दीखती। जब जरूरत होगी आपको लिखा जायगा। पत्र का उत्तर देना। **किमधिकम्**

ज्येष्ठ कृष्ण 11 वि॰ सं॰ 1938 हस्ताक्षर
ता॰ 23 मई 1881 दयानन्द सरस्वती(अजमेर)

महर्षि दयानंद सरस्वती ने राष्ट्र (समाज) के लिए जो उपकार किया है। वह अविस्मरणीय है। आर्य समाज की स्थापना कर संसार को एक नव ज्योति प्रदान की है। उनकी जितनी भी प्रशंसा की जाए कम है। आर्य समाज के अनेक विद्वानों ने उनके प्रतिकृतज्ञता प्रकट करते हुए उनके द्वारा प्रत्येक लेखन एवं वक्तृत्व को प्रत्यक्ष रखने का प्रयास किया है। महर्षि की कृतियों में उनके पत्र भी धरोहर के रूप में विद्वानों ने जनसामान्य के लिए प्रस्तुत किए हैं, उनमें से महर्षि के पत्र भी हमारे लिए महती प्रेरणा के साधन हैं। प्रत्येक माह में एक या दो पत्र 'आर्य-सन्देश' में क्रमश: प्रकाशित किए जाएगें। इन्हें प्रकाशित करने का हमारा उद्देश्य यह है कि महर्षि ने इतने कम समय में अनेक ग्रन्थों का प्रणयन, वेद भाष्य, एवं वेदांगों का भाष्य किया, संस्कृत पाठशालाओं एवं आर्य समाजों का संचालन पत्राचार के माध्यम से किया जाता रहा था। उनकी इस अद्भुत कार्य क्षमता को जानने के लिए' रामलाल कपूर ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित 'ऋषि दयानन्द सरस्वती के पत्र एवं विज्ञापन' को अवश्य पढ़ें। - सम्पादक

सत्यार्थ प्रकाश कम कीमत पर उपलब्ध कराने हेतु साहित्य प्रचार यज्ञ में आहुति देने वाले महानुभावों की सूची

16.	आर्यसमाज इन्द्रपुरी, नई दिल्ली	2000/-
17.	आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश-2, नई दिल्ली	10000/-
18.	आर्यसमाज राजनगर-2, पालम कालोनी, नई दिल्ली	2000/-
19.	श्री रामभज मदान, राजागार्डन, नई दिल्ली	2000/-
20.	आर्यसमाज मानसरोवर गार्डन, नई दिल्ली	2000/-
21.	आर्यसमाज पंखा रोड सी ब्लाक, नई दिल्ली	11000/-
22.	श्री सुरेन्द्र यादव जी, द्वारका, नई दिल्ली	300/-
23.	श्री यशपाल चावला जी, रोहिणी, दिल्ली	500/-
24.	श्री जितेन्द्र खरबन्दा, कीर्ति नगर, नई दिल्ली	1000/- क्रमश:

100 सत्यार्थ प्रकाश 10-10 रुपये में वितरित करने के लिए 2000/- रुपये सहयोग राशि की आवश्यकता है। अत: आपसे निवेदन है कि आप भी अपने परिवार, आर्यसमाज और अपनी संस्था की ओर से अधिक सहयोग राशि भेजकर सत्यार्थ प्रकाश को जनसाधारण तक अधिकाधिक संख्या में पहुंचाने के लिए सहयोग दें। कृपया अपनी दान राशि नकद/चैक/बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम उपरोक्त बैंक खाते में जमा कराएं। **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को दिया गया समस्त दान आयकर अधिनियम की धारा 80जी के अन्तर्गत आयकर मुक्त है। - *महामन्त्री***

क्या महात्मा गांधी सहिष्णु थे?

- डॉ. विवेक आर्य

अमेरीकी राष्ट्रपति बराक ओबामा का यह बयान कि 'भारत में पिछले कुछ वर्षो में बढ़ती धार्मिक असहिष्णुता से गांधी जी आहत हुए होते' से कुछ तथाकथित बुद्धिजीविओं की जैसे लाटरी ही निकल गई। भूल स्मृत हो चुके गुजरात दंगों को अल्पसंख्यकों पर अत्याचार के नाम पर फिर से उछालने की कवायद फिर से तेज हो गई है मगर इस मानसिक कुश्ती में एक प्रश्न पर किसी का भी ध्यान नहीं गया की क्या महात्मा गांधी जी धार्मिक असहिष्णुता के प्रतीक है? 1947 के पश्चात के भारत में महात्मा गांधी के चिंतन पर शंका करना अपने आपको कट्टरवादी, दक्षिणपंथी कहलाने जैसा बन गया है क्योंकि देश की सत्ता अधिकतर उन लोगों के हाथों में रही जिनकी राजनैतिक सोच महात्मा गांधी के विचारों का समर्थन करती थी। इस लेख का विषय महात्मा जी के विरुद्ध लेखन नहीं अपितु सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग है।

सत्यार्थ प्रकाश के विषय में वीर सावरकर ने कहा था - 'महर्षि जी का लिखा अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश हिंदी जाति की रगों में ऊष्ण रक्त का संचार करने वाला है। सत्यार्थ प्रकाश की विद्यमानता में कोई विधर्मी अपने मजहब की शेखी नहीं मार सकता।'

महात्मा हंसराज ने कहा था- 'यह पुस्तक आर्यसमाज का सुदर्शन चक्र है जिसके प्रहारों के आगे मतवादियों का ठहरना बड़ा ही कठिन है।'

किसी ने सत्यार्थ प्रकाश को चौदह बोर वाला पिस्तौल कहा तो अनेकों ने इसे पढ़कर आर्यसमाज के बनाये यज्ञकुण्ड में डालकर देश और समाज की सेवा की परन्तु गांधी जी के सत्यार्थ प्रकाश के विषय में विचार पढ़िये-

'मेरे हृदय में स्वामी दयानंद के विषय में बड़ा मान है। मैं समझता हूँ की उन्होंने हिन्दू धर्म की बहुत सेवा की है.उनकी वीरता में संदेह करने की गुन्जाइश नहीं, परन्तु उन्होंने धर्म को संकुचित बना दिया है। मैंने आर्य समाजियों की बाइबिल 'सत्यार्थ प्रकाश' को पढ़ा है। मैंने इतने बड़े सुधारक का ऐसा निराशाजनक ग्रन्थ आज तक नहीं पड़ा....। स्वामी दयानंद ने सत्य और केवल सत्य पर खड़े होने का दावा किया है परन्तु उन्होंने अनजाने में जैन धर्म, इस्लाम धर्म, ईसाइयत और स्वयं हिन्दू धर्म को अशुद्ध रूप में उपस्थित किया है। उन्होंने पृथ्वी तल पर अत्यंत सहिष्णु और स्वतंत्र सम्प्रदायों में से एक (हिंदू सम्प्रदाय) को संकुचित बनाने का प्रयास किया है। यद्यपि वे मूर्ति-पूजा के विरुद्ध थे परन्तु उन्होंने वेदों को मूर्ति बना दिया है और वेदों में विज्ञान प्रतिपादित प्रत्येक विद्या का होना प्रमाणित किया है। मेरी सम्मति में, आर्यसमाज 'सत्यार्थ प्रकाश' की उत्तमताओं से उन्नत नहीं हो रहा है, अपितु उसकी उन्नति का कारण उसके संस्थापक का विशुद्ध चरित्र है। आप जहाँ कहीं भी आर्यसमाजियों को पायेंगे, वहाँ जीवन और जागृति मिलेगी, परन्तु संकुचित विचार और लड़ाई झगड़े की आदत से वे अन्य सम्प्रदाय वालों से लड़ते रहते है और जहाँ ऐसा नहीं वहाँ आपस में स्वयं लड़ते रहते हैं।'

सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाशन के पश्चात भी मुसलमानों में कोई विशेष उत्तेजना नहीं फैली थी। परन्तु गांधी जी के यंग इंडिया के उपरोक्त लेख से मुसलमानों ने आर्यसमाज के विरुद्ध उपद्रव आरम्भ कर दिया जिसके कारण महाशय राजपाल का बलिदान हुआ। कालांतर में सिंध में 1944 से सत्यार्थ प्रकाश पर प्रतिबन्ध लगाने का प्रयास किया गया जिसके विरुद्ध महात्मा नारायण स्वामी जी ने आंदोलन कर कराची जाकर सार्वजानिक रूप से सत्यार्थ प्रकाश का वितरण किया। महात्मा गांधी ने इस विषय पर कहा कि 'सिंध सरकार ने अच्छा नहीं किया किन्तु मैं आर्यसमाजी भाइयों से आग्रह करता हूँ कि वे चौदहवें समुल्लास में संशोधन कर दें।'

अपने विचार रखने से पहले हम आर्य उपन्यासकार वैद्य गुरुदत्त जी द्वारा लिखित उपन्यास पत्रलता की कुछ पंक्तियाँ यहाँ लिखते है-

'कठिनाई यह है कि आप सदैव ही व्यक्ति को व्यक्ति की ही दृष्टि से देखते हैं। समाज का अस्तित्व आपकी दृष्टि में है ही नहीं। इसी कारण आपकी और हमारी विचारधारा भिन्न भिन्न दिशाओं में जाती है। किसी मृत व्यक्ति के कार्यो का ज्ञान इस कारण नहीं होता कि उससे उस व्यक्ति को लाभ अथवा हानि पहुँचा सकती है। इसमें लाभ यह होता है कि समाज के सामूहिक आचार विचार पर उस गुण दोष अन्वेषण का प्रभाव पढ़ता है। मानव अपनी की गई भूलों को जानकर उससे बचता है और पहले किये गए उचित कर्मो के ज्ञान से, आगे उन्नत अवस्था तक पहुँचने का यत्न करता है।'

समीक्षा : जिस काल में सत्यार्थ प्रकाश लिखी गई उससे बहुत पहले, उस समय में भी और उसके पश्चात भी देश में भिन्न भिन्न सम्प्रदाय पैदा हो रहे है। यह सभी मत-सम्प्रदाय राष्ट्र के चरित्र बल को निर्बल बना रहे हैं, अन्धविश्वास फैला रहे है, मानव को धर्म के नाम पर भटका रहे हैं, जिससे धर्म बदनाम हो रहा है। ऐसे में सत्यार्थ प्रकाश के माध्यम से स्वामी जी ने मानव को दीर्घ काल तक ज्योति पाने का मार्ग दिखा दिया।

स्वामी दयानन्द जी के ही शब्दों में सत्यार्थ प्रकाश की रचना का उद्देश्य धार्मिक सहिष्णुता का प्रतिपादक नहीं तो और क्या है। स्वामी जी लिखते है- "इन सब मतवादियों, इनके चेलों और अन्य सबको परस्पर सत्यासत्य के विचार करने में अधिक परिश्रम न हो इसलिए यह ग्रन्थ बनाया है, जो इसमें सत्य का मंडन और असत्य का खंडन किया हैं वह सबको बताना ही प्रयोजन समझा गया हैं। इसमें जैसी मेरी बुद्धि ,जितनी विद्या औ जितना इन चारों मतों के मूल ग्रन्थ देखने से बोध हुआ हैं उसको सबके आगे निवेदन कर देना मैंने उत्तम समझा हैं क्योंकि विज्ञान गुप्त हुए का पुनः मिलना सहज नहीं हैं। पक्षपात छोड़कर इसको देखने से सत्यासत्य मत सबको विदित हो जायेगा। इस मेरे कर्म से यदि उपकार न मानें तो विरोध भी न करें क्योंकि मेरा तात्पर्य किसी की हानि या विरोध करने में नहीं किन्तु सत्यासत्य का निर्णय करने कराने का हैं। इसी प्रकार सब मनुष्यों को न्याय दृष्टि से सत्यासत्य का निर्णय करना कराना उचित है। मनुष्य जन्म का होना सत्य असत्य का निर्णय करने कराने के लिए हैं। इसी मत मतान्तर के विवाद से जगत में जो-जो अनिष्ट फल हुए, होते हैं और होंगे उनको पक्षपात रहित विद्वत्जन जान सकते हैं। जब तक इस मनुष्य जाति में परस्पर मिथ्या मत-मतान्तर का विरुद्ध वाद न छुटेगा तब तक अन्याय न्याय का आनंद न होगा। सन्दर्भ- सत्यार्थ प्रकाश अनुभूमिका -1"

12 वें समुल्लास की भूमिका में स्वामी दयानंद जी लिखते हैं "इसमें जैनी लोगों को बुरा न मानना चाहिए क्योंकि जो जो हमने इनके मत विषय में लिखा हैं वह केवल सत्यासत्य के निर्णयार्थ हैं न कि विरोध या हानि करने के अर्थ। सन्दर्भ अनुभूमिका-2"

13 वें समुल्लास की भूमिका में स्वामी दयानंद जी लिखते हैं "यह लेख केवल सत्य की वृद्धि और असत्य के ह्रास होने के लिए लिखे हैं न कि किसी को दुःख देने व हानि करने व मिथ्या दोष लगाने के अर्थ।" सन्दर्भ अनुभूमिका-3

इन सन्दर्भो से यह सिद्ध होता है कि सत्यार्थ प्रकाश की रचना का उद्देश्य सम्पूर्ण मानव जाति का कल्याण था, फिर क्या सत्यार्थ प्रकाश को आर्यसमाजियों की बाइबिल लिखकर क्या महात्मा गाँधी ने उसे संकीर्ण नहीं बना दिया?

जिस स्वामी दयानंद ने समाधि को ब्रहानन्द का त्यागकर अपने प्राणों की आहुति वैदिक धर्म के प्रचारार्थ एवं हिन्दू जाति की महान सेवा में दी गई। उन पर हिन्दू धर्म को संकुचित करने का आरोप लगाकर महात्मा गाँधी अपने कौनसे सिद्धांत को सार्वभौमिक सिद्ध करने का प्रयास कर रहे थे?

महात्मा गांधी अपनी प्रार्थना सभाओं में रामभजन के पश्चात गीता, गुरुग्रंथ साहिब एवं कुरान की आयतें भी होती थी। सत्यार्थ प्रकाश के 14 वें समुल्लास में संशोधन करने की राय देने वाले गाँधी जी ने कभी कुरान में उन आयतों का संशोधन करने की सलाह मुसलमानों को कभी क्यों नहीं दी जिनमें गैर मुसलमानों को काफिर और उनकी बहु-बेटियों को लूटने की बातें खुदा के नाम से लिखी गई है?

वेदों में विज्ञान पर टिप्पणी करने से पहले महात्मा गाँधी कभी इस्लाम में प्रचारित चमत्कारों जैसे उड़ने वाले बुराक गधे और चाँद के दो टुकड़े होने जैसी मान्यताओं पर कभी अविश्वास दिखाने की कभी हिम्मत न कर सके । इतनी निर्भीकता गाँधी जी में नहीं थी।

भाई परमानन्द जब साउथ अफ्रीका गए तो महात्मा गाँधी जी से मिले थे। गाँधीजी ने भाई जी से कोई अप्रतिम उपहार देने का आग्रह किया। भाई जी ने गाँधी जी को सत्यार्थ प्रकाश भेंट किया तो गांधी जी ने कहा की ऐसी अनुपमकृति का लेखन एक आदित्य ब्रह्मचारी के द्वारा ही संभव है। उन्हीं महात्मा गाँधी के विचार कालांतर में परिवर्तित हो जाते है एवं वे मुसलमानों की नैतिक-अनैतिक सभी मांगों को मानते हुए इतना खो जाते थे कि उन्हें यह आभास भी नहीं हो पाता था की वे कब सहिष्णु के बदले असहिष्णु विचारों का समर्थन कर रहे है।

अगर सत्य शब्दों में कोई मुझसे पूछेगा की आप आधुनिक इतिहास में किनके विचारों को सबसे अधिक सहिष्णु मानते है तो मेरा उत्तर एक ही होगा- 'मेरा देव दयालु दयानंद'

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

आर्य विद्यालयों में दूसरे चरण की नैतिक शिक्षा परीक्षा सम्पन्न

आर्य विद्या परिषद् के तत्त्वावधान में आर्य विद्यालयों में आयोजित की गई दूसरे चरण की नैतिक शिक्षा की परीक्षा उत्साह पूर्वक सम्पन्न हुई। जिसमें दिल्ली के समस्त आर्य विद्यालयों ने सम्मिलित होकर बालकों में केवल परीक्षा को ही आधार नहीं बनाया अपितु आर्य मान्यताओं को आचरण में लाने के लिए प्रशिक्षित करने हेतु प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन भी किया जाता है। जिससे वर्तमान समय में पाश्चात्यता को जीने वाले बालक अपने धर्म, भाषा, संस्कृति एवं सभ्यता को भी जान सके।

प्रथम पृष्ठ का शेष

वैदिक साहित्य के प्रचार-प्रसार का यज्ञ ....

आनन्द कुमार चौहान (एमेटि ग्रुप) के कर कमलों से वैदिक मन्त्रोचार पूर्वक सम्पन्न हुआ। अपराह्न 11:30 बजे डॉ॰ आनन्द चौहान ने वैदिक मन्त्रोचारण के साथ रीबन काटकर विश्व पुस्तक मेले में वैदिक साहित्य के 8 विक्रय केन्द्रों का शुभारम्भ किया। हिन्दी साहित्य हॉल नं12 में स्टाल नं0 219 225 तक तथा अंग्रेजी साहित्य का स्टाल हाल नं01ए स्टॉल नं0 379 है। डॉ॰ आनन्द ने पुस्तक विक्रय केन्द्रों का अवलोकन किया और दिल्ली सभा एवं आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट की वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार हेतु सतत् प्रयास की भूरि-भूरि प्रशंसा की और इस वैदिक साहित्य प्रचार -प्रसार यज्ञ में हर सम्भव सहयोग के लिए उपस्थित रहने का आश्वासन दिया । डॉ॰ चौहान ने कहा कि धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए साहित्य विक्रय सस्ता और सुलभ साधन है।

इस अवसर पर आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट एवं दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी एवं महामंत्री श्री विनय आर्य तथा दिल्ली सभा एवं ट्रस्ट के सभी पदाधिकारी मुख्यरूप से उपस्थित रहें महर्षि दयानन्द और वेद की विचार धारा को प्रत्येक व्यक्ति तक पहुँचाने के लिए प्रयासरत दिल्ली सभा ने महर्षि के अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' को मात्र 10/- रुपये में देने का निश्चय किया और 25000 लोगों तक पहुँचाने का लक्ष्य निर्धारित कियां इस महान कार्य के लिए निरन्तर 30 व्यक्ति अपनी नि:शुल्क सेवा पुस्तक मेले में वैदिक साहित्य के प्रचार-प्रसार हेतु दे रहे हैं। सत्यार्थ प्रकाश को 10/- रुपये में वितरित करने में 20/- रुपये की दर से प्रत्येक सत्यार्थ प्रकाश पर सब्सिडी प्रदान की जा रही है। अत: वैदिक धर्म के साहितय प्रचार-प्रसार के इस महायज्ञ में प्रत्येक आर्य महानुभाव, आर्य समाज तथा आर्य संस्थाएँ अपनी आहुति अवश्य प्रदान करें, जिससे वैदिक विचार धारा प्रत्येक मानव, परिवार एवं समाज की धरोहर बन जाए। जो व्यक्ति नि:शुल्क शारीरिक रूप से भी सेवा देनी चाहे वह अवश्य साहित्य स्टॉलों पर पहुँच कर साहित्य प्रचार कार्य में सेवा दें ।

वैदिक साहित्य विक्रय केन्द्रों का उद्घाटन महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का 191 वाँ जन्म दिवस होने से और भी महत्वपूर्ण बन जाता है । अत: आज हम यह शपथ लें कि महर्षि के आदर्शों एवं मन्तव्यों को जन-जन तक पहुँचाने के लिए तन-मन-धन से प्रयास करेंगे। यह मेला 22 फरवरी 2015 तक आयोजित किया जा रहा है।

इस अवसर पर 20 /- प्रति सत्यार्थ प्रकाश पर दी गई सब्सिडी हेतु 100/- सत्यार्थ प्रकाश पर 2000/- रुपये की आवश्यकता है। अत: आप 100, 200, अथवा 500 सत्यार्थ प्रकाश पर सहयोग राशि दिल्ली सभा के खाते में जमा कराकर रसीद प्राप्त कर लें। इसके लिए श्री विजय आर्य से मो॰ 9540040339 पर सम्पर्क करें।

वैदिक साहित्य के विक्रय केन्द्रों के शुभारम्भ के साथ ही साहित्य विक्रय हेतु लोगों का ताता लग गया। सम्प्रदाय विशेष के लोगों ने भी साहित्य विक्रय हेतु उत्साह दिखाया । वैदिक साहित्य के स्टॉल पर वैदिक वाङ्मय का साहित्य एवं प्रचार सामग्री जैसे- चारों वेदों की वी सी डी भजनों की सी डी और वी सी डी, पटके, बैनर, स्टीकर, पत्रक, हवन सामग्री, हवन पात्र, ओ3म् के ध्वज, तथा आर्यत्व (हिन्दुत्व) के अस्तित्व संरक्षण हेतु साहित्य, बालोपयोगी साहित्य जैसे महर्षि के जीवन पर कॉमिक्स, बोधकथाएँ, शंका समाधान बाल सत्यार्थ प्रकाश आदि अनेक प्रकार से वैदिक धर्म प्रचार हेतु साहित्य और प्रचार सामग्री उपलब्ध होगी।

विशेष - प्रत्येक आर्य जन से निवेदन है कि मेले में आप स्वयं आएँ और अपने इष्ट मित्रों को भी साथ लाएँ अथवा एस॰एम॰एस॰ वट्स एप्प, फेस बुक तथा ई-मेल के माध्यम से प्रेरित करें और मेले के उद्देश्य को सफल बनाने में हमारा सहयोग करें।

सभा के प्रचार स्टाल पर वैदिक साहित्य खरीदते - देखते पुस्तक प्रेमी एवं अन्य मतावलम्बी तथा सेवाएं देते आर्य महानुभाव

अपनी ओर से सत्यार्थ प्रकाश पर सब्सिडी हेतु सहयोग जमा करें

'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' खाता सं. 910010009140900 एक्सिज बैंक, IFSC - UTIB0000223 MICR - 110211025

कृपया अपनी सहयोग राशि जमा करने के उपरान्त श्री विजय आर्य जी को मो. 9540040339 पर तत्काल सूचित करें एवं अपनी डिपोजिट स्लिप डाक द्वारा अथवा aryasabha@yahoo.com पर भेजकर राशि की रसीद मंगा लेवें।

प्रथम पृष्ठ का शेष

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार का 112वां दीक्षान्त समारोह सम्पन्न

कि विश्वविद्यालय को न जाने किन कारणों से सी ग्रेड में डाल दिया गया। उन्होंने आश्वस्त किया कि वे विश्वविद्यालय को उच्चीकृत करने में पूर्ण प्रयास करेंगे। उन्होंने कहा कि शिक्षा प्राप्त कर ज्ञान की उपलब्धि होती है लेकिन दीक्षा से मनुष्य संस्कारवान् होता है। उन्होंने कहा कि देश-दुनिया में आज शिक्षा प्राप्त करने पर भी दो प्रकार की धाराएं दिखाई देती हैं एक वो जो स्नातक होकर विश्वस्तर पर अपने ज्ञान एवं संस्कार से प्रगति पथ पर आरूढ़ हैं। एक वो जो आतंकवादी गतिविधियों में संलग्न हो गए हैं और भारत को अस्थिर करना चाहते हैं। जब तक ज्ञान के साथ संस्कार नहीं जुड़ेगे तब तक वह ज्ञान किसी काम का न होकर विनाशकारी हो सकता है। देश को आज भी श्रेष्ठ शिक्षा की आवश्यकता है, कैसी भी परिस्थिति हो शिक्षा के लिए धन की कमी नहीं होनी चाहिए। आज देश की शिक्षा का पाश्चात्यीकरण किया जा रहा है, जिस कारण भारतीय संस्कृति का ह्रास हो रहा है, ज्ञान के साथ संस्कार की कमी हो रही है। गृहमंत्री ने कहा कि महात्मा गांधी कहा करते थे कि भारत श्रेष्ठ शिक्षा के माध्यम से ही पुनः जगद्गुरु बन सकता है। आज भी यदि देखा जाए तो विश्व के ज्ञान-विज्ञान के लिए भारत ही सर्वोच्च शिक्षा का केन्द्र है। हमें अपने पूर्वजों को भी जानना चाहिए जिनको कि आज के आधुनिक स्नातक भूलते जा रहे हैं।

राजनाथ सिंह ने कहा कि भारतीय उपनिषद् आदि भारतीय वांग्मय अत्यन्त समृद्ध है। भारत का यह वांग्मय सभी शोधों का स्रोत है। उन्होंने कहा कि आज इस अद्भुत ज्ञान-विज्ञान को संरक्षित और विकसित करने की आवश्यकता है। व्यक्तित्व के समग्र विकास की आवश्यकता है। हमें भौतिक विकास साथ ही आध्यात्मिक विकास की ओर भी ध्यान देना चाहिए, क्योंकि परमानन्द प्राप्त करने के लिए तो आध्यात्म की ही आवश्यकता होती है। हमें अपने मन को बड़ा करना होगा। मन बड़ा होने पर ही हमारे पुराने ऋषि-मुनि वसुधैव कुटुम्बकं का संदेश दे पाए थे, जो कि विश्व के किसी अन्य देश ने नहीं दिया।

कुलाधिपति डा0 रामप्रकाश ने कहा कि मनुष्य का सबसे बड़ा आचार्य उसकी मां है, क्योंकि मां से सुशीलता और सभ्यता का सूत्रप्राप्त होता है।

कुलपति डा0 सुरेन्द्र कुमार ने विश्वविद्यालय की रिपोर्ट प्रस्तुत की तथा अभ्यागतों का स्वागत किया।

कुलसचिव एवं संयोजक डा0 विनोद शर्मा ने सभी अभ्यागतों का धन्यवाद किया।

डा0 सोमदेव शतांशु ने यज्ञ कराया तथा मुख्य अतिथि का अभिनंदन पत्र पढ़ा।

- शेष पृष्ठ 7 पर

विशेष सम्पादकीय

वर्तमान राजनीति का बदलता स्वरूप

प्राचीन काल में राजनीतिक प्रक्रिया एक विशेष व्यवस्था में बंधी होती थी। यह प्रणाली 'राजतन्त्र' कहलाती थी जो राजा को एक मर्यादा एवं धर्म से बाँधे रखती थी जिसमें राजगुरु व्यवस्था रहती थी। राजगुरु की अनुमति के बिना राजा किसी कार्य को करने का अनैतिक साहस नहीं कर सकता था। ऐसा कोई भी उदाहरण नहीं कि राजा ने राजगुरु की आज्ञा का उल्लंघन किया हो। यदि किसी राजा ने ऐसा दुस्साहस किया तो उसका अवश्य पतन हुआ। राजा का चयन योग्यता के आधार पर होता था और प्रशिक्षित किया जाता था। उसके पश्चात् ही उसे 'राजा' की पदवी प्राप्त होती थी। अनेक कारणों के होते हुए कालान्तर में वह व्यवस्था बदल गई। जो राजा रह गए वे राजगुरुओं के अभाव में तानाशाह बन गए, और यह प्रक्रिया विनाश की ओर अग्रसर हो गई । समय व्यतीत होते हुए राजतन्त्र से जनता का विश्वास उठ गया और लोकतन्त्र की मांग उठने लगी। अतः लोकतांत्रित प्रक्रिया का प्रारम्भ हुआ जिसमें जनता को राजा कहा जाने लगा। जनता मिलकर अपने राजा को चुनने लगी। दिखने में तो बहुत अच्छा लगता है लेकिन इसमें आई विकृति ने भलेपन को समाप्त कर के रख दिया । जिसका नतीजा ये हुआ कि राजनीति को सेवा के स्थान पर व्यवसाय मान लिया गया। इसमें धन का बोलबाला हो गया, भ्रष्टाचार का बोलबाला हो गया, और भ्रष्टाचार बढ़ता ही चला गया। धीरे-धीरे अच्छे लोगों ने राजनीति से दूरियाँ बना लीं यह धन-बल और बाहुबल का अखाड़ा हो गया, जिससे इस नुकसान को हम वहन कर रहे है। लेकिन तात्पर्य है कि हम सब लोग चाहे सीधे राजनीति में न जाएं परन्तु अच्छे विचारों वाले लोगों को सहयोग अवश्य देना चाहिए। जो अच्छे विचार वाले लोग आगे आएँ उनको चुनकर, उनका समर्थन कर राजनीति को स्वच्छ बनाने का प्रयास करें। इस दिशा में अच्छे लोगों का सहयोग देकर वर्तमान राजनीतिक परिवेश को शुद्ध बनाया जा सकता है, जो हम सबका कर्त्तव्य है। अच्छे लोग राजनीति में आएँगे तभी समाज एवं राष्ट्र का कल्याण व इसकी उन्नति हो सकती है, इसलिए हम सबका कर्त्तव्य है कि अच्छाई का चयन, समर्थन एवं सहयोग करें, तभी इस राजनीतिक परिवेश को बदला जा सकता है। तभी कहा जा सकता है कि ''जनता का शासन- जनता के लिए'' ।।

नि:शुल्क कलैण्डर मंगाएं

आर्यों से एक निवेदन,

एक श्रेष्ठ और सफल शिक्षक वही होता है जो अपने छात्र/छात्राओं को पढ़ाने के लिए अपने साथ अच्छी शिक्षण सामग्री (TeachingAid)लेकर जाता है। छात्र /छात्रा ऐसे शिक्षक/शिक्षिका की बात ध्यान से सुनते भी हैं और ग्रहण भी करते हैं। आर्य समाजरूपी शिक्षक/ शिक्षिका के लिए लोगों को वैदिक ज्ञान प्रदान करने के लिए छह प्रकार के वैदिक शिक्षण सामग्री कैलेंडर के लिए ई-मेल करें। ये सामग्री आपके ई-मेल पते पर भेज दिए जाएँगे और आप अपने क्षेत्र से फ्लेक्स निकलवाकर प्रचार कर सकते हैं। घर में आर्य समाज में एवं सार्वजानिक स्थानों पर टाँग सकते हैं। कैलेंडर निम्न हैं- ईश्वर के 100 नाम, यज्ञ विज्ञान, वैदिक संध्या विज्ञान, त्रेतवाद, ब्रह्मचक्र, तैतीस कोटि के देवता के कैलेंडर बड़े आकर्षक हैं। जो ऐसा न कर सकें वे सीधे 12/3 संविद नगर, इन्दौर(मध्य प्रदेश)-452018 पते पर मँगा सकते हैं। कृपया नीचे लिखे ईमेल ramesh.bhat43@gmail.com पर संपर्क करें।

- मन्त्री, आर्यसमाज रावतभाटा वाया कोटा (राजस्थान)

करनाली में स्मृति दिवस समारोह

टंकारा से मूलशंकर त्रिवेदी सायल आया, यहाँ शुद्ध चैतन्य बना चाणोद् (करनाली) व्यास आडाय, सिन्नोर में पढ़ता रहा, उसी की स्मृति में दिनांक 30 जनवरी 2015 को सर्वोच्च अंक उत्तीर्ण छात्र-छात्राओं व साधु संतों, का सम्मान किया गया। यह आयोजन कुबेर भंडारी आश्रम के श्री चंद्रकांत जी पंडया एवं शक्ति पीठ की साध्वी मीरा के सौजन्य से सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के संयोजक स्वामी प्रवासानंद सरस्वती थे।

-हरीश पुरी, प्रभारी

एम०डी०एच० इंटरनेशनल स्कूल का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

प्रतिवर्ष की भांति विद्यालय का वार्षिकोत्सव वायु सेना सभागार दिल्ली केन्ट में रंगारंग कार्यक्रम ''मेरा देश रंगीला'' संपन्न हुआ। माननीय महाशय जी के करकमलों द्वारा तिरंगा झंडा फहराने व विशाल सुसज्जित हॉल में दीप प्रज्वलन के साथ प्रारंभ हुआ। मुख्य अतिथि आत्मशुद्धि केन्द्र आर्य समाज बहादुरगढ़ के संरक्षक स्वामी धर्ममुनि जी ने अभिभावकों तथा अतिथिगणों को प्रेरणादायी उद्बोधन किया। सांसद प्रवेश वर्मा व उपशिक्षा निदेशक श्रीमती कमलेश कुमारी चौहान ने संबोधित किया। महाशय जी के 92 वर्ष के प्रेरणादायी जीवन के उल्लेखनीय धार्मिक, सामाजिक व शैक्षिक कार्यों का स्वागत हर्षध्वनि व ताली बजाकर किया गया । विशिष्ट अतिथिगणों में श्री आर०एन०राय, श्री ओवराय जी, श्री राजेन्द्र कुमार जी, महाशय जी की तीन सुपुत्रियाँ द्वारका विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती नंदिनी व सुभाष नगर स्कूल की प्रधानाचार्या श्रीमती शकुंतला तनेजा व महाशय जी की पुत्रवधु श्रीमती ज्योति गुलाटी भी कार्यक्रम में उपस्थित रही। बच्चों द्वारा सांस्कृतिक प्रस्तुतिकरण, गणेश वंदना, कव्वाली, भंगड़ा-गिद्दा, संस्कृत व बंगला गीत के साथ-साथ, सुभाष चन्द्र बोस की नाटिका, गंगा अवतरण नाटिका के साथ-साथ विशेष उल्लेखनीय रहा। समस्त अतिथियों का शाल ओढकर स्वागत किया गया। स्वामी दयानन्द जी की ''जीवनी'' भेंट की गई।

विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति ट्रॉफी देने के साथ-साथ स्वामी दयानन्द जी की सचित्र पुस्तकें दी गई। प्रधानाचार्या जी सहित समस्त अध्यापिकाओं ने भी मंच पर सुंदर गीत प्रस्तुत किया। बच्चों की ड्रिल योगासन व पिरामिड आकर्षण का केंद्र रहें, समस्त बच्चों को पुरस्कार वितरण अतिथियों का स्वागत व आभार ज्ञापन विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती एम० मोरिस व व्यवस्थापक श्री गोविंद राम अग्रवाल ने किया।

इस अवसर पर पूज्य महाशय जी द्वारा विद्यालय की वार्षिक पत्रिका ''अनुभूति'' का विमोचन किया गया। आर्यसमाज की संयोजिका श्रीमती सरोज यादव व श्रीमती वीना आर्या का भी मंच पर अभिनंदन किया गया।

आर्य समाज आसनसोल का वार्षिकोत्सव

आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल एवं आर्य समाज आसनसोल तथा इनके द्वारा संचालित आर्य विद्यालयों का वार्षिकोत्सव 16 से 22 फरवरी 2015 तक आयोजित किया जा रहा है। समापन समारोह 22 फरवरी को होगा। इस अवसर पर यज्ञ, संगोष्ठी, छात्र- छात्राओं के सांस्कृतिक कार्यक्रम के आयोजन भी होंगे।

- डॉ. उमाशंकर प्रसाद, मन्त्री

प्रेरक प्रसंग

प्रभात से रात हो गई

मैंने अपने द्वारा लिखित 'रक्तसाक्षी पंडित लेखराम' पुस्तक में पंडितजी की एक घटना दी है जो मुझे अत्यन्त प्रेरणाप्रद लगती है। वीरवर लेखराम के बलिदान से एक वर्ष पूर्व की बात है। पंडितजी करनाल पधारे। वहाँ से दिल्ली गये। उनके साथ एक आर्य सज्जन भी गये। मेरा अनुमान है कि साथ जानेवाले महाशय का नाम श्रीमान् लाला बनवारी लालजी आर्य था। वे पंडितजी के बड़े भक्त थे।

पंडितजी दिल्ली में एक दुकान से दूसरी और दूसरी से तीसरी पर जाते। एक बाजार से दूसरे में जाते। एक पुस्तक की खोज में प्रात: काल से वे लगे हुए थे। उन दिनों रिक्शा, स्कूटर, टैक्सियाँ तो थी नहीं। वह युग पैदल चलने वालों का युग था। पंडित लेखराम सारा दिन पैदल ही इस कार्य में घूमते रहे। कहाँ खाना और कहाँ पीना सब-कुछ भूल गये।

साथी ने कहा, ''पंडितजी ऐसी कौन-सी आवश्यक पुस्तक है, जिसके लिए आप इतने परेशान हो रहे हैं? प्रभात से रात होने को है।''

पंडित जी ने कहा, ''मिर्जा गुलाम अहमद कादियानी ने आर्य जाति पर एक वार किया है। उसके उत्तर में मैंने एक पुस्तक लिखी है। उनमें इस पुस्तक का प्रमाण देना है। यह पुस्तक मुसलमानी मत की एक प्रामाणिक पुस्तक है। प्रमाण तो मुझे कण्ठस्थ है फिर भी इसका मेरे पास होना आवश्यक है। इसमें इस्लाम के मसला 'लफ हरीरी' का विस्तार से वर्णन है। यह मसला किया मुसलमानों के 'मुता' के भी कुछ आगे है।

अन्त में पंडितजी को एक बड़ी दुकान से वह पुस्तक मिल गई। कुछ और पुस्तकें पसन्द आईं। वे भी ले-लीं। इन सब पुस्तकों का मूल्य पन्द्रह रुपये बनता था। पंडितजी जब यह राशि देने लगे तो दुकानदार को यह विचार आया कि ऐसी पुस्तकें कोई साधारण व्यक्ति तो क्रय नहीं करता। यह ग्राहक कोई नामी स्कालर ही हो सकता है ।

दुकानदार संयोग से एक आर्य पुरुष था। उसने पैसों की ओर हाथ बढ़ाने की बजाए ग्राहक से यह प्रश्न कर दिया कि आपका शुभ नाम क्या है? आप कौन हैं? इससे पूर्व कि रक्तसाक्षी वीरवर लेखराम बोलते उनके साथी ने एकदम कहा, ''आप हैं धर्मरक्षक, जातिरक्षक, आर्यपथिक पंडित लेखरामजी।''

यह सुनते ही दुकानदार ने पंडितजी को नमस्ते की। उसने प्रथम बार ही वीर जी के दर्शन किए थे। पैसे लेने से इन्कार कर दिया। इस घटना के दो पहलू है। पंडित जी की लगन् देखिए कि धर्म रक्षा के लिए पैदल चलते-चलते प्रभात से रात कर दी और उस चरणानुरागी महाशय बनवारी लालजी की धुन का भी मूल्यांकन कीजिए जो अपने धर्माचार्य के साथ दीवाना बनकर घूम रहा है। इस घटना का एक दूसरा पहलू भी है। पंडितजी को 25-30 रुपया मासिक दक्षिणा मिलती थी। अपनी मासिक आय का आधा या आधे से भी अधिक धर्मरक्षा में लगा देना कितना बड़ा त्याग है। कहना सरल है, परन्तु करना अति कठिन है। पाठकवृन्द उस दुकानदार के धर्मानुराग को भी हम भूल नहीं सकते जिसने पंडितजी से अपनी प्रथम भेंट में ही यह कह दिया कि मैं पंद्रह रुपये नहीं लूँगा। आप कौन-सा किसी निजी धन्धे में लगे हैं। यह आर्य धर्म की रक्षा का प्रश्न है, यह हिन्दू जाति की रक्षा का प्रश्न है।

क्या आप जानते हैं कि वह दुकानदार कौन था? उसका नाम था श्री बाबू दुर्गा प्रसादजी। आर्यों! आइए! अपने अतीत को वर्त्तमान करके दिखा दें ।

पुण्य स्मरण

वैदिक विद्वान श्री वेद प्रकाश शास्त्री जी

वयोवृद्ध पूज्य श्री वेदप्रकाश शास्त्री जी का जन्म जम्मू-कश्मीर राज्य के पाकिस्तान द्वारा अधिकृत क्षेत्र में जिला मीरपुर की तहसील कोटली में 10 अप्रैल 1920 को हुआ इनके पिता महाशय टेकचन्द जी ने इन्हें वैदिक संस्कृति की शिक्षा दिलाने के लिए आचार्य प्रवर पं० मुक्तिराम (स्वामी आत्मानन्द) जी के पास गुरुकुल पोठाहार, चोहा भक्ताँ, जिला रावलपिण्डी में, जो अब पाकिस्तान मे है, भेज दिया।

वहाँ आर्ष पद्धति के अनुसार शिक्षा प्रापत करने के उपरान्त आपने अध्यापन-कार्य करते हुए शास्त्री, एम०ए० (हिन्दी) एवं बी०टी० की परीक्षएँ उत्तीर्ण कीं। आप सन् 1978 में एक राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय दिल्ली में प्रधानाध्यापक के पद से सेवा-निवृत हुए अध्यापक गोष्ठियों में आप संस्कृत भाषा के अध्यापकों का मार्ग-दर्शन भी करते रहे। आप कई पुरस्कारों से भी पुरस्कृत हो चुके हैं। आपने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विख्यात पुस्तके राष्ट्र मंजूषा एवं मंजुल मंजूषा अंग्रेजी अनुवाद सहित लिखी हैं। ये पुस्तकें भारतीय संस्कृत की महान् धरोहर हैं। चारों वेदों का अकारादि हिन्दी एवं अंग्रेजी अनुवाद तथा अकारादि क्रम से 'वैदिक विश्वकोष' प्रकाशित हो रहा है जिसका प्रकाशन वास्तव में आर्य जाति ही नहीं अपितु समस्त मानवता के लिए अनुपम एवं अमूल्य भेंट होगी।

आपके द्वारा लिखी गई 'ज्ञान-रश्मि', 'संस्कृत विनोद' आदि पुस्तकें नेशनल शैक्षणिक अनुसंधान केन्द्र द्वारा प्रकाशित की गई। सुक्खु के बेटे' पुस्तक पर आपको राष्ट्रपति पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया ।

लेकिन बड़े दु:ख के साथ कहना पड़ रहा है कि आज वे हमारे बीच नहीं हैं। 30 जनवरी 2015 को उन्होने इस नश्वर देह को त्याग दिया। किन्तु अपने श्रेष्ठ साहित्य के माध्यम से एवं अपने जीवन की प्रेरणाओं एवं शिक्षा के द्वारा हजारों लाखों छात्रों में ही नहीं अपितु इस आर्य जनमानस के हृदय में सदा विद्यमान रहेंगे। हम उनकी विचार धाराओं के अनुगामी बनकर वेद एवं महर्षि दयानन्द के मिशन को आगे बढ़ाएँ यही उनके लिए हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

सत्यार्थ प्रकाश, यजुर्वेद पारायण यज्ञ एवं योगसाधना चिकित्सा शिविर सम्पन्न

स्वतंत्रता के मन्त्रद्रष्टा, महान राष्ट्र नायक महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित 'अमर-ग्रन्थ' सत्यार्थ प्रकाश के प्रचारार्थ गुजरात के पटेल प्रगति मंडल, हनीपार्क रोड, अड़ाजण, सूरत में योगगुरु उमाशंकर जी महाराज के सान्निध्य में यजुर्वेद पारायण महायज्ञ, योग साधना व चिकित्सा शिविर एवं सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव बड़े हर्ष और उल्लासपूर्वक 13 जनवरी 2015 से 18 जनवरी 2015 तक मनाया गया जिसमें देश एवं विदेश के अनेक विद्वान्, आचार्य एवं संन्यासीवृन्द, सम्मलित हुए।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं प्रादेशिक आर्य प्रतिनिधि सभाओं के अधिकारियों ने उपस्थित होकर समारोह में विशाल आर्य जन समूह को वेद, महर्षि दयानन्द एवं आर्य समाज की विश्व भर में होने वाली गतिविधियों के विषय में जानकारी दी और आर्य समाज की भावी योजनाओं पर कार्य करने की प्रेरणा दी। राष्ट्रीय स्तर के कई राजनेता भी समारोह में उपस्थित रहे।

चम्पारण बिहार में आर्य महासम्मेलन का आयोजन

जिला आर्य सभा चम्पारण के तत्त्वावधान में आर्य महासम्मेलन 2015 चम्पारण का आयोजन 21 से 24 मार्च 2015 तक मोतिहारी, चम्पारण में आयोजित किया जा रहा है। आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पहुंचे।

- मन्त्री

ग्रन्थ परिचय

व्यवहार भानु

प्रश्न 1 : क्या महर्षि ने 'व्यवहारभानु' नामक ग्रन्थ की भी रचना की है?

उत्तर : हाँ, महर्षि ने व्यवहारभानु नामक एक उपयोगी ग्रन्थ भी लिखा है।

प्रश्न 2: इस ग्रन्थ को लिखने का क्या प्रयोजन है?

उत्तर : जैसा कि इसके नाम से ही विदित होता है -व्यवहार का सूर्य या व्यवहार रूपी सूर्य। जैसे सूर्य के प्रकाश में अन्धकार समाप्त होकर सब कार्य भली प्रकार सिद्ध होते हैं, उसी प्रकार जो व्यक्ति व्यवहार में कुशल होता है, वह जीवन में सुख व सफलता प्राप्त करता है! अत: महर्षि ने सबको, विशेषकर बालकों को, यथायोग्य व्यवहार की शिक्षा देने के लिए इस ग्रन्थ को रचा। महर्षि के अपने शब्दों में, "व्यवहार भानु ग्रन्थ को बनाकर प्रसिद्ध करता हूँ कि जिसको देख-दिखा, पढ़-पढ़ाकर मनुष्य अपने और अपने-अपने संतान तथा विद्यार्थियों का आचार अत्युत्तम करें कि जिससे आप और वे सब दिन सुखी रहें।"

प्रश्न 3: क्या इसमें केवल व्यवहार की शिक्षा ही दी गई है?

उत्तर : नहीं, व्यवहार के अतिरिक्त विद्या-अविद्या, धर्म-अधर्म, कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य, मूर्ख-अमूर्ख, पण्डित-अपण्डित, न्याय-अन्याय आदि अनेक विषयों का परिचय व ज्ञान, प्रश्न-उत्तर के माध्यम से कराया गया है। इसके अतिरिक्त, शिक्षा प्रदान करने की विधि, ब्रह्मचर्य, राजा आदि अनेक विषयों को भी लिया गया है।

प्रश्न 4: क्या इसमें केवल पारिवारिक व्यवहार का उल्लेख है अथवा अन्य भी?

उत्तर : इसमें माता-पिता व सन्तान के आपस में व्यवहार के अतिरिक्त बालक से लेकर वृद्ध पर्यन्त मनुष्यों के सुधार के लिए आचार्य, विद्यार्थी, राजा-प्रजा, धार्मिक, अधार्मिक, मूर्ख, बुद्धिमान, पति-पत्नी, इन सबको भी आपसी व्यवहार में कुशलता प्राप्त करने की शिक्षा प्रदान की गई है।

प्रश्न 6: इससे तो विदित होता है कि यह ग्रन्थ बहुत उपयोगी होगा?

उत्तर : हाँ, निश्चित रूप से यह ग्रन्थ बहुत उपयोगी है। इसके पठन से जहाँ विद्या पढ़ने-पढ़ाने की प्रेरणा मिलती है, वहाँ यह भी पता चलता है कि जो मनुष्य विद्या कम भी जानता है, परन्तु दुष्ट व्यवहारों को छोड़कर धार्मिक होके खाने-पीने, बोलने, सुनने, बैठने, उठने, लेन-देन आदि व्यवहार सत्य से युक्त होकर यथायोग्य रूप से करता है, वह कभी दु:ख को प्राप्त नहीं होता। इसके विपरीत, जो उच्च विद्या पढ़कर भी उत्तम व्यवहार नहीं करता, दुष्ट कर्म करता है, वह कभी सुख प्राप्त नहीं कर सकता। इस प्रकार, यह सुख प्राप्ति का मार्ग-दर्शक ग्रन्थ है।

प्रश्न6: यह ग्रन्थ किस भाषा में लिखा गया है?

उत्तर : यह ग्रन्थ सरल हिन्दी भाषा में लिखा गया है, जिससे सभी इसे सुखपूर्वक समझ कर अपना व्यवहार व स्वभाव सुधार कर उत्तम कार्य कर सकें। बीच-बीच में संस्कृत भाषा में प्रमाण भी दिये गये हैं। अनेक मनोरंजक दृष्टान्त देकर अभिप्राय स्पष्ट किया गया है। इससे ग्रन्थ बहुत अधिक सरल एवं रुचिकर बन गया है।

प्रश्न 7: 'व्यवहारभानु' की रचना कब हुई?

उत्तर : ग्रन्थ का रचना काल संवत् 1936, फाल्गुन मास, शुक्ल पक्ष की 15वीं तिथि है। इसे महर्षि ने काशी में लिखा था।

(महर्षि दयानन्द ग्रन्थ परिचय से उद्धृत)

अगले अंक में एक और ग्रंथ के परिचय की प्रस्तुति होगी। - सम्पादक

चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ सम्पन्न

आर्य समाज शालीमार बाग बी०एन० पूर्वी की कर्मठ कार्यकर्त्री माता श्रीमती रविकान्ता एवं श्रीमान गिरिधर किशोर मैथिल ने सपरिवार यजमान के रूप में उपस्थित रहकर चतुर्वेद पारायण महायज्ञ का आयोजन हर्षोल्लास पूर्वक 15 फरवरी 2015 को सम्पन्न कराया। इस अवसर पर पूज्य स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी महराज ने आशीर्वचन स्वरूप चारों वेदों की शिक्षा को मानव जीवन से जोड़ते हुए उपदेश दिया। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य विकास तिवारी ने आत्मा के साथ परमात्मा के सम्बन्ध की व्याख्या की। वेद पाठी उद्गाता ब्र० टिकेश्वर एवं ब्र० हरिओम शास्त्री ने सस्वर वेद पाठ कर याज्ञिकों को आनन्दित किया। इस समय पर डॉ० धर्मपाल जी (पूर्व कुलपति गुरुकुल कागड़ी) एवं वैदिक विद्वान् डॉ० महेश विद्यालंकार जी ने वेद रहस्य प्रकट करते हुए यजमानों को आशीर्वाद दिया।

गुरुकुल वैदिक आश्रम वेद व्यास, राउरकेला ओडिशा का 55 वाँ वार्षिक महोत्सव सम्पन्न

गुरुकुल वैदिक आश्रम, वेद व्यास राउरकेला ओडिशा का 55 वाँ वार्षिकोत्सव हर्षोल्लास पूर्वक सम्पन्न हुआ। 16 फरवरी से 18 फरवरी 2015 तक आयोजित उत्सव में वेद पारायण यज्ञ, वेद सम्मेलन, ब्रह्मचारियों का क्रीडा कौशल एवं व्यायाम प्रदर्शन कार्यक्रम व पुरस्कार वितरण के कार्यक्रम सम्पन्न हुए जिसमें पूज्य स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, स्वामी विशुद्धानन्द सरस्वती, स्वामी सुधानन्द सरस्वती, आदि संन्यासी एवं विद्वद्गण ने अमृतमय वाणी से सारगर्भित वेद का उपदेश किया। डॉ० अपूर्व देव शर्मा ने सुन्दर भजन संगीत प्रस्तुत किया। - *मुख्याधिष्ठाता*

कोटा में मनाया गया लाला लाजपतराय का जन्मदिन

28 जनवरी को एम. एस.सैंट्रल सी. सै. स्कूल कोटा में लाला लाजपत राय जी का जन्मोत्सव आयोजित किया गया। इस अवसर पर मुख्य वक्ता रामप्रसाद याज्ञिक ने लाला लाजपतराय के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि लालाजी प्राय: कहा करते थे कि महर्षि दयानन्द मेरे पिता तथा आर्य समाज मेरी माता है। इनसे ही मुझे राष्ट्रभक्ति की प्रेरणा मिली है। साइमन कमीशन के विरोध में लाला जी अंग्रेजों की लाठियों के वार से घायल हो गये तब उनके अंतिम वाक्य 'मेरे ऊपर बरसाई हर लाठी अंग्रेजी राज्य के ताबूत की कील साबित होगी' शहीद भगतसिंह पर भी इनका गहरा प्रभाव पड़ा और वे स्वतंत्रता आंदोलन के सिपाही बने। - *अर्जुनदेव चढ्ढा, प्रधान, जिला आर्य प्रतिनिधि सभा*

निर्वाचन समाचार

आर्य समाज ग्रेटर कैलाश

पार्ट -2, नई दिल्ली-110048

प्रधान - श्री सहदेव नांगिया

मन्त्री - श्री एस०के०कोहली

कोषाध्यक्ष - श्री आर०एन० सलूजा

आर्य समाज जंगपुरा विस्तार

लिंक रोड, नई दिल्ली-110014

प्रधान - श्री पी. के. भाटिया

मन्त्री - श्री विजय मलिक

कोषाध्यक्ष - श्री विनोद मलिक

संस्कृत शिक्षक संघ, दिल्ली

अध्यक्ष- डॉ0 बृजेश गौतम

महासचिव - डॉ0 वी दयालु

कोषाध्यक्ष- श्री पवन कुमार गुप्ता

आर्य समाज डी ब्लॉक विकासपुरी नई दिल्ली के तत्त्वावधान में

महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव पर भव्य भजन संध्या

महर्षि दयानन्द सरस्वती के 191वें जन्म दिवस के शुभ अवसर पर 'भजन-संध्या' का भव्य आयोजन हर्ष एवं उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ। 10 फरवरी से 12 फरवरी 2015 महिला सम्मेलन अपराहन 2:00 बजे यज्ञ से प्रारम्भ हुआ। सम्मेलन की मुख्यातिथि वीना आर्या। भजन संगीत- श्रीमती विनीता चावला जी ने प्रस्तुत किया। भजन संध्या कार्यक्रम सायं 6:30 बजे प्रारम्भ हुआ। कार्यक्रम के अध्यक्ष- श्री धर्मपाल आर्य (प्रधान दि०आ०प्र० सभा), मुख्य अतिथि - श्री निर्मला शिव भगवान लाहौरी विशिष्ट अतिथि - श्री विनय आर्य (महामंत्री दि०आ०प्र० सभा) जी ने महर्षि के जीवन दर्शन पर प्रकाश डाला सम्मेलन को सम्बोधित किया तथा श्री अंकित उपाध्याय जी ने मधुर भजनोपदेशक के माध्यम से उपस्थित जन समुदाय को आह्लादित किया। -*अनिल भाटिया, मंत्री*

पृष्ठ 5 का शेष

छात्रों को कुलपति, कुलाधिपति तथा मुख्य अतिथि ने स्वर्ण पदक तथा उपलब्धियां प्रदान की। कार्यक्रम का संचालन प्रो0 मुकेश रंजन वर्मा ने किया। मंच पर एम.डी.एच. प्रमुख महाशय ध र्मपाल, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री विनय आर्य, मुख्याधिष्ठाता आचार्य यशपाल, सहा0मु0 जयप्रकाश विद्यालंकार, हरिद्वार सांसद रमेश पोखरियाल 'निषंक' आदि उपस्थित थे।

समारोह में विधायक मदन कौशिक, यतीश्वरानंद, आदेश चौहान, मेयर मनोज गर्ग, सांसद प्रतिनिधि विमल कुमार, संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति डा0 महावीर अग्रवाल तथा दून विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 जैन, समस्त शिक्षक एवं कर्मचारी तथा उपाधि धारक उपस्थित थे।

- *जन सम्पर्क अधिकारी*

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2015–2017
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 19/20 फरवरी, 2015
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2015–2017
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 18 फरवरी, 2015

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
"घर-घर यज्ञ - हर घर यज्ञ" योजना का शुभारम्भ

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने 'घर-घर यज्ञ - हर घर यज्ञ' योजना का शुभारम्भ किया है जिसमें प्रशिक्षित विद्वान् पुरोहित के द्वारा आर्य समाज से सम्बन्धित प्रतिदिन किसी न किसी आर्य महानुभाव के निवास पर पूर्ण वैदिक विधान से यज्ञ कराया जाता है और परिवार के बालकों से साक्षात्कार किया जाता है। बालकों से आर्यसमाज वेद एवं महर्षि दयानन्द के मन्तव्यों से सम्बन्धित वार्तालाप कर उन्हें प्रेरित करते हैं, साथ ही सन्ध्या एवं यज्ञ के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश एवं बालोपयोगी वैदिक साहित्य दिल्ली सभा की ओर से यजमान परिवार को भेंट किया जाता है। यह सभा की ओर से नि:शुल्क प्रचार कार्य हेतु व्यवस्था है जिससे अधिकाधिक लोग अपने घर पर यज्ञादि कार्य कराएं।

अत: आप दिल्ली सभा की इस योजना का लाभ प्राप्त करें और घर पर यज्ञ एवं अन्य संस्कारादि कराने के लिए **आचार्य सत्यप्रकाश जी** से मोबाइल नं0 **9650183335** पर सम्पर्क करें।

- विनय आर्य, महामन्त्री, 9958174441

प्रतिष्ठा में,

'आस्था' पर प्रेरक वैदिक प्रवचन - प्रतिरात्रि : 9:30 बजे

प्रत्येक सोमवार एवं मंगलवार -	आचार्य ज्ञानेश्वरार्य	(प्रेरक-प्रवचन)
प्रत्येक बुधवार -	आचार्य सत्यजित् आर्य	(योग दर्शन)
प्रत्येक गुरुवार -	डॉ0 विनय विद्यालंकार	(व्यक्तित्व-विकास)
प्रत्येक शुक्रवार व शनिवार -	डॉ0 वागीश आचार्य	(प्रेरक प्रवचन)

आर्यजन इस सूचना को प्रत्येक माध्यम से अपने मित्रों-परिचितों तक नियमित भेजते रहें।

ऐतिहासिक घटनाएं भेजें

सभी पाठक महानुभावों से निवेदन है कि जिस किसी सज्जन को आर्य समाज के इतिहास की कोई घटना, किसी आर्य समाज मंदिर की स्थापना से सम्बन्धित किसी ऐतिहासिक तथ्य अथवा घटना की जानकारी हो, तो aryasandeshdelhi@gmail.com पर ईमेल भेजकर कृतार्थ करें। अध्येताओं एवं शोधकर्त्ताओं से अनुरोध है कि अपने आर्य समाज से सम्बन्धित अथवा वैदिक ज्ञान विज्ञान के शोधपूर्ण लेख समाजकल्याण हेतु उपरोक्त ईमेल आईडी पर भेजने की कृपा करें जिससे जन सामान्य को लाभ प्राप्त हो सकें।

- सम्पादक

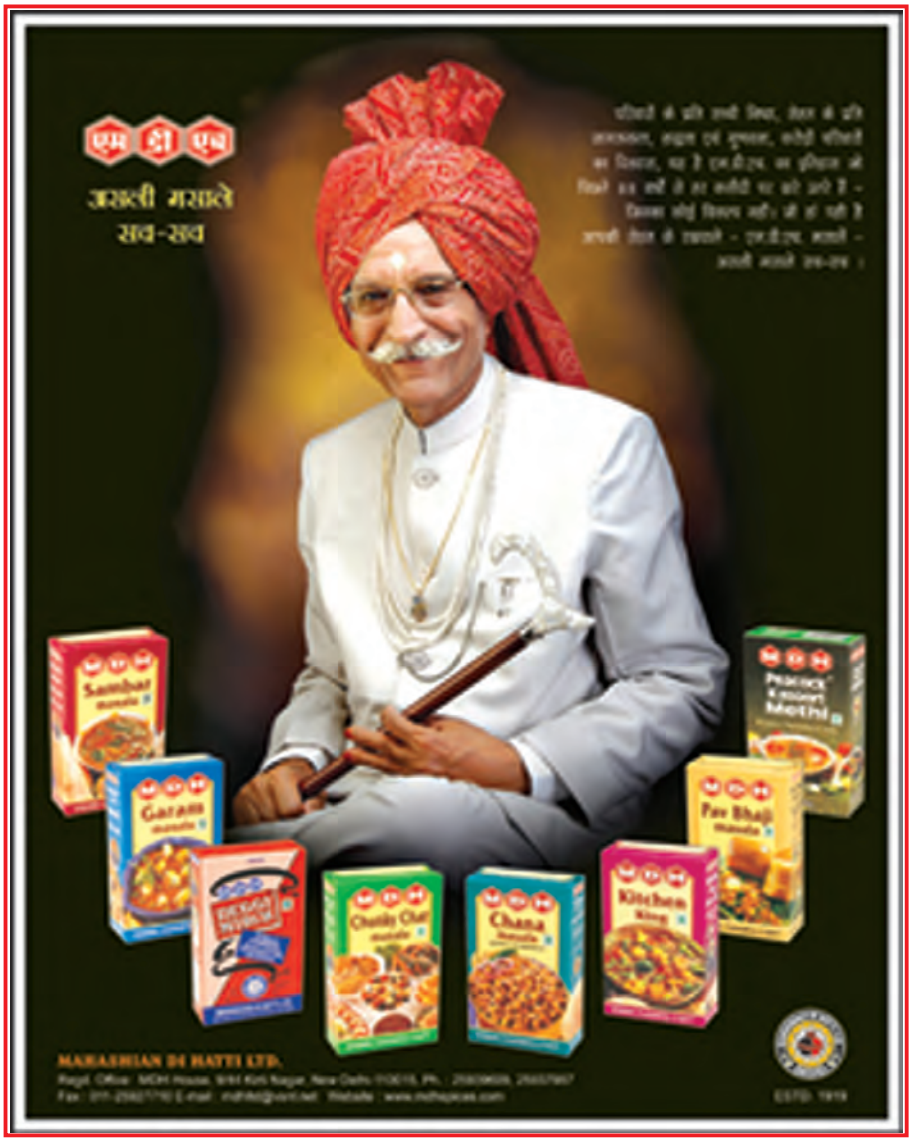

आर्य सन्देश

क्या आप चाहते हैं कि-

आर्यसन्देश को प्रचारित प्रसारित किया जाए?

आपके चाहने वालों को भी प्राप्त हो?

आपके विदेश में रहने वाले दोस्तों को भी प्राप्त हो?

आपके मित्रों-रिश्तेदारों को भी प्राप्त हो जो इसे पढ़ने की रूचि रखते हों?

यदि हां!

तो जिन मित्रों को आर्यसन्देश पढ़ाना चाहते हैं उसकी ईमेल आईडी लिखकर हमें डाक से भेजें, ईमेल करें या 9540040322 पर एस.एम.एस. करें। उन्हें आर्यसन्देश प्रति सप्ताह इंटरनेट द्वारा भेजा जाता रहेगा।

- सम्पादक

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक धर्मपाल आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए हरि हर प्रैस, ए–29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र–1, नई दिल्ली–28 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; टेलीफैक्स : 23360150; 23365959; IVRS : 011-23488888 E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह